79

श्योनाक

Oroxylum indicum (L.) Benth ex. Kurtz.

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा
और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2021

श्योनाक

***Oroxylum indicum* (L.) Benth ex. Kurtz.**

कुल	:	Bignoniaceae
हिन्दी नाम	:	सोनापाठा, कुल्फा, टेन्टू
संस्कृत नाम	:	दीर्घवृन्त, भूतवृक्ष, शल्लक, शोण, भल्लूक, पूति वृक्ष, मण्डूकपर्ण, शूरण, पत्रोर्ण, कट्वंग, शुकनासा, पृथुशिम्बा, टिंटुक, मयूरजंघा, वटुक
अंग्रेजी नाम	:	Midnight horror, Broken bones, Tree of Damocles, Indian trumpet tree, Indian caper, Indian calosanthes
आयुर्वेदिक नाम	:	श्योनाक, अरालू
यूनानी नाम	:	सोनपत्ता, कुलब
उपयोगी भाग	:	जड़, छाल, फल, पत्तियाँ, बीज

पादप रसायन

इस वृक्ष के विभिन्न पादपांगों (पत्तियों, जड़, छाल, काष्ठ, फल, बीज, इत्यादि) में अनेक अल्केलॉयड्स, फ्लेवेनॉयड्स, टर्पेनॉयड्स, कैरोटेनॉयड्स तथा टैनिन्स पाये जाते है, जिनमें Chrysin, Baicalein, Dehydrobaicalein, Oroxylin, Oroxinidin, Prunetin, Biocherin-A, β-Sitosterol, Anthraquinone, Aloe-emodin, Tetuin, Scuttellarein, Anthrocyanin, p-Coumaric acid, Ellagic acid, Isoflavone, Iridoid, इत्यादि प्रमुख पादप रसायन है।

गुणधर्म

उपरिवर्णित पादप रसायनों की उपस्थिति श्योनाक के विभिन्न पादपांगों को अनेक रोग निवारक गुण प्रदान करती है। आयुर्वेद के सभी प्रमुख ग्रंथों, यथा – भावप्रकाश निघण्टु, चरक संहिता, इत्यादि में श्योनाक के औषधीय गुणों का वर्णन मिलता है। इसमे कफ–वात शामक, कफ निस्सारक, आमवातरोधी, प्रतिउपचायक, रोगाणुरोधी, जीवाणुरोधी, रक्तशोधक, ज्वरहर्ता, कृमिघ्न, शोथघ्न, व्रणरोधक, ग्राही, वेदनाहर्ता, कामोद्दीपक, बलकारक, स्तम्भक, पाचक, रोचक,

उदर सक्रियतावर्धक, विरेचक, मूत्रल, वातानुलोमक, स्वेदजनक, यकृतरक्षक तथा कैंसररोधी गुण विद्यमान है। आयुर्वेद में इसके गुण निम्नानुसार वर्णित किए गए हैं।

रस – तिक्त, कषाय, मधुर ; गुण – लघु, रूक्ष ; वीर्य – उष्ण ; विपाक – कटु ; कर्म – कफ, वातं

उपयोग

उपरोक्त औषधीय गुणों के कारण श्योनाक के विभिन्न पादपांगों का उपयोग प्रमुखता से आयुर्वेद, सिद्धा, यूनानी, चीनी तथा अनेक परम्परागत चिकित्सा प्रणालियों मे प्राचीन काल से होता आ रहा है। आयुर्वेद मे इस वृक्ष की जड़ 'दशमूल' एवं 'वृहद् पंचमूल' का एक प्रमुख एवं अनिवार्य घटक है।

इसके विभिन्न पादपांगों, विशेष रूप से जड़, का उपयोग अनेक व्याधियों, यथा – विषम ज्वर, मलेरिया, श्वांस रोग, दमा, एलर्जी, नासारोग, निमोनिया, खॉसी, गले मे खराश, फेफड़ों में खराबी, मंदाग्नि, बदहजमी, अतिसार, खूनी पेचिश, पेट मे सूजन, जलोदर, संधिवात, आमवात, कर्णशूल, मुँह के छाले, पीलिया, हैपेटाइटिस, उपदंश, प्रसूतिजन्य दुर्बलता, चर्मरोगों, कैंसर, इत्यादि के उपचार मे किया जाता है। घावों मे पड़ गये कीड़ों तथा पशुओं के पेट के कीड़ों को निकालने में भी इसका उपयोग किया जाता है।

कई आयुर्वेदिक औषधियों, यथा – दशमूलारिष्ट, अमृतारिष्ट, धन्वंतरि घृत, चित्रक हरीतिकी, च्यवनप्राश, धन्वंतरि तैलम्, धन्वंतरिष्टम् इत्यादि का भी यह एक महत्वपूर्ण घटक है। औषधीय उपयोगों के अलावा श्योनाक के अन्य गैर औषधीय उपयोग भी हैं। विशिष्ट आकार एवं आकृति के कारण श्योनाक को एक शोभादार वृक्ष के रूप में भी लगाया जाता है। इसकी पत्तियाँ, फल तथा तना खाने के काम मे भी आते है। कई समुदाओं मे विवाह के समय के रीति रिवाजों मे इसका प्रयोग किया जाता है। ऐसी मान्यता भी है कि इसके बीजों की मालायें तथा मूर्तियाँ बना कर घर की छत से टॉगने पर प्रेतवाधाओं से रक्षा होती है।

वितरण

भारतीय उपमहाद्वीप, चीन के दक्षिणी भाग, दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों, यथा – मलयेशिया, लाओस, कम्बोडिया, वियतनाम, थाईलैण्ड तथा म्यांमार मे यह वृक्ष प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। भारत में शुष्क पश्चिमी अंचलों को छोड़कर अन्य लगभग सभी प्रदेशों मे समुद्रतल से 1000 मीटर तक की ऊँचाई वाले गर्म तथा नम क्षेत्रों मे यह पाया जाता है, यद्यपि अब यह वृक्ष 'दुर्लभ,

लुप्तप्राय एवं संकटापन्न' प्रजातियों की श्रेणी में आ चुका है। कई स्थानों पर इसकी खेती प्रारम्भ हो चुकी है। राजस्थान के बॉसवाड़ा जिले में तो काफी बड़े क्षेत्र मे इसकी खेती की जा रही है। बढ़ती बाजार मॉग एवं अपर्याप्त प्राकृतिक उपलब्धता को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड द्वारा विशेष रूप से इसकी खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

आकारिकी

श्योनाक मध्यम आकार का, तेजी से बढ़ने वाला, पर्णपाती वृक्ष है। सामान्यतया इसकी ऊँचाई 7 से 12 मीटर तक होती है परन्तु अनुकूल परिस्थितियों मे इसके वृक्ष 18 मीटर तक की ऊँचाई प्राप्त कर सकते हैं। इस वृक्ष की छाल अन्दर से पीले–सुनहरे रंग की परन्तु बाहर से भूरे–धूसर रंग की होती है।

समस्त द्विबीजपत्री (dicotyledonous) वृक्ष प्रजातियों में श्योनाक की पत्तियाँ सबसे लम्बी होती हैं। उनके डंठल की लम्बाई तो दो मीटर तक हो सकती है। ये डंठल सूखने के पश्चात जनवरी माह में झड़ कर वृक्ष के आधार पर एकत्र हो जाते है, जो कि रात्रि मे हड्डियों के ढ़ेर जैसे प्रतीत होते हैं। इसी कारण इस वृक्ष को अंग्रेजी में 'Midnight horror' तथा 'Broken bones' एवं संस्कृत में 'भूत वृक्ष' नाम दिए गए हैं।

पत्तियों मे 2–4 अलिंद (pinnae) हो सकती हैं तथा प्रत्येक अलिंद मे 3–5 पत्रक (leaflets) होते है, जो विपरीत क्रम में व्यवस्थित होते हैं। इन पत्रकों की लम्बाई 6–12 से.मी. तथा चौड़ाई 4–9 से.मी. होती है। ये पत्रक अंडाकार, बाहरी छोर पर नुकीले एवं किनारियों पर लहरदार (wavy) होते है। पत्रनाल पर छोटे–छोटे दाने होते है।

इस वृक्ष मे पुष्पन जून से अगस्त के मध्य होता है। पुष्प रात में खिलते हैं। ये द्विलिंगी, वृहदाकार, मांसल एवं दुर्गन्धयुक्त होते है। ये बाहर से रक्ताभ–बैगनी रंग के तथा अन्दर से पीले–गुलाबी रंग के होते है जो सीधी, लगभग 10 से.मी. लम्बी मंजरियों (terminal racemes) में व्यवस्थित रहते है। पुष्पों मे प्राकृतिक परागण प्रायः चमगादड़ों के माध्यम से होता है।

इस वृक्ष मे फलन दिसम्बर से मार्च के मध्य होता है। फल सामान्यतया 30 से 90 से.मी. लम्बे (कभी–कभी 1.5 मी. तक लम्बे), 5 से 10 से.मी. चौड़े, चपटे, काष्ठीय, दोनो किनारों पर थोड़े मुड़े हुए तथा नुकीले कैपसूल होते है, जो कि वृक्ष की नग्न शाखाओं से लटके हुए किसी बड़े पक्षी के डैनों अथवा तलवारों जैसे दिखते है। इसी कारण इस वृक्ष का एक नाम 'Tree of Damocles' भी है।

फलों के अन्दर बहुत से पतले, 5–6 से.मी. लम्बे, पंखदार, कागजी बीज होते हैं। लगभग 3 वर्ष की आयु मे श्योनाक के वृक्ष मे पुष्पन तथा फलन प्रारम्भ हो जाता है। प्रथम फलन में ही अंकुरणक्षमतायुक्त (viable) बीज उत्पन्न होने लगते हैं। तीन से पॉच माह में बीज परिपक्व हो जाते हैं।

जलवायु एवं मृदा

श्योनाक के पौधे की वृद्धि हेतु 850–1350 मि.मी. औसत वार्षिक वर्षा एवं रेतीली–दोमट उपजाऊ मृदा उत्तम मानी गई है, यद्यपि मध्यम से गहरी काली मिट्टी में भी इसे सफलतापूर्वक लगाया जा सकता है।

प्रबर्धन सामग्री : बीज

नर्सरी तकनीक

नर्सरी मे पौध तैयार करने के लिए श्योनाक के पुराने वृक्षों से फरवरी–मार्च माह मे फलियों के चटकने के पूर्व उन्हे तोडकर उनसे परिपक्व बीज प्राप्त किए जाते हैं। बीजों को नर्सरी मे सीधे थैलियों में बोया जा सकता है। मिट्टी तथा FYM का 2:1 अनुपात मे मिश्रण तैयार कर उसे थैलियों में भर कर थैलियो को बीज बुवाई हेतु पहले से तैयार रखते हैं। बोने से पूर्व बीजों को 12 घंटे तक पानी में भिगोकर रखने से लगभग 80–90 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त हो जाता है। बुबाई हेतु मार्च का उत्तरार्ध सबसे उपयुक्त समय है। नर्सरी मे थैलियों की आवश्यकतानुसार सिंचाई कर उनकी मिट्टी को हमेशा थोड़ा नम रखना चाहिए।

क्षेत्र तैयारी

मानसून के पूर्व खेत की अच्छी तरह से जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा तथा खरपतवार मुक्त कर लेना चाहिए। जुताई के समय खेत में प्रति हेक्टेयर 20 टन गोबर खाद भी मिट्टी मे मिलाने से पौधो की वृद्धि दर अच्छी होती है।

प्रत्यारोपण

नर्सरी मे तैयार पौधों को खेत मे मानसून आगमन के पश्चात 0.75 मी. X 1 मी. अन्तराल पर प्रत्यारोपित किया जा सकता है।

निंदाई–गुड़ाई

वर्ष में दो बार निंदाई–गुड़ाई करनी चाहिए। पहली निंदाई–गुड़ाई अगस्त के पूर्वार्ध मे तथा द्वितीय निंदाई–गुड़ाई वर्षाकाल की समाप्ति के तत्काल पश्चात की जा सकती है।

सिंचाई

रोपित पौधों की आवश्यकतानुसार सिंचाई करनी चाहिए। ग्रीष्मकाल मे 7 से 10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई आवश्यक है।

मृत पौधो को बदलना

रोपण के पश्चात सितम्बर माह में मृत पौधों को बदलने का कार्य करना चाहिए।

अन्त:रोपण

रोपण के प्रथम वर्ष मे श्योनाक के साथ अल्प समय में तैयार होने वाले शाकीय प्रजातियों यथा, कालमेघ का अन्तःरोपण कर अतिरिक्त फसल भी ली जा सकती है।

विदोहन

एक से तीन वर्ष पुराने पौधो की जड़ो का विदोहन वृहद् पंचमूल हेतु किया जा सकता है, यद्यपि 6 वर्ष पुराने पौधों से अधिक उत्पादन मिलता है। विदोहन का उपयुक्त समय अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य है। विदोहन के पूर्व खेत में हल्की सिंचाई करने से विदोहन मे आसानी होती है।

विदोहनोत्तर प्रबन्धन

विदोहन उपरान्त जड़ों को छोटे–छोटे टुकड़ों मे काट कर उन्हे छीलकर छाल अलग कर छाया मे सुखाना चाहिए, जब तक कि उनमे आर्द्रता प्रतिशत 12 % तक न रह जाये। तत्पश्चात इन्हे आर्द्रता रोधी थैलों में भरकर भण्डारित करना चाहिए।

उपज

प्रति हेक्टेयर 10 क्विटल जड़ (शुष्क भार) प्राप्त होना पाया गया है।

स्कैन QR कोड

ई-चरक ऐप

- **जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करे।**
- **यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले-स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।**

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर-482008 (म.प्र.)

संपर्क : 0761-2665540, 9300481678, 9724658622, फैक्स : 0761-2661304

ई-मेल : rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com

वेब : http://www.rcfccentral.org

Amrit # 8349634350